20.5.20

सप्रसंग व्याख्या करू (मैथिली प्रबोधिनी) भा-II

प्र :- समता अहाँक कतए सँ करता जनकपुरक श्रीमान ?
किन्तु विदेह बैह कहबै छथि, मात्रिक अहाँ किसान ।।

उत्तर :- प्रस्तुत अवतरण प्रतिपदा के 'हलधर' शीर्षक कविता सँ उद्धृत कयल गेल अछि। एहि अवतरण मे समाजीक प्रगतिवादी भावना व्यापक रूप सँ परिलक्षित होइत अछि। कविक समक्ष तीन गोट हलधर छथि, एक द्वापरक हलधर दोसर त्रेताक हलधर आ तेसर युग-युग सँ चिर उपेक्षित हलधर अर्थात हरबाह लोकनि। द्वापर तथा त्रेताक हलधर भेलाह बलराम ओ जनक। हरबाह लोकनिक दयनीय दशा सँ द्रवित भए कवि हुनका सबकेँ सम्बोधित करैत तुलनात्मक दृष्टि सँ देखैत समकक्ष मे जनक ओ बलराम अहाँ लौकिक नहि आबि सकैत अछि। जनक सँ हलधर भेलाह खेतक उपज जानकी केँ अपना घर अनि अपन घर केँ अलंकृत कयलन्हि। कविक व्यक्तिगत भावना छल जे जनकल्याण भावना सँ अभिप्रेरित भए कहल काव्य-पाक भावना करैत छलाह। एहि पद्यक अवतरणक भावना सरल एवं बोधगम्य अछि उपमालंकारक विन्यासक संगहि प्रगति, भावना सन्निहित अछि, सुन्दर पद-योजना तँ कविक प्रखर काव्य प्रतिभाक परिचायक कहल जा सकैछ।

NOKIA

Scanned with CamScanner

२.५.२० सप्रसंग व्याख्या B.A (Art) (H) PAPER — II

Q : 'माता' शब्दक नहि जानैत छी ईश्वर केहन माधुर्य प्रदान कयने छथि जे ओ जाहि शब्दमे मिलित अछि, ताहि शब्दमे एक अपूर्व महत्व, विचित्र माधुर्य तथा हृदयग्राही प्रभाव उत्पन्न कऽ दैत अछि।

प्रस्तुत गद्यांश यदुनाथ झा 'यदुवर' माता ओ मातृभूमि शीर्षक निबन्धक अंश सँ लेल गेल अछि।

समस्त संसारमे माताक महत्ता सांसारिक समस्त संबंध सँ सर्वाधिक उपर मानल जाइत अछि। माताक शब्द माधुर्य सँ भरल एतेक हृदयग्राही प्रभाव दैत अछि जे विलक्षण अछि। शब्द ओ वात्सल्य भावक त्रिवेणी मे स्नान कए माता शब्द सुनतहि भावक जल माताक स्नेह सँ असीम आनन्द ओ भक्ति भावना जाग्रत कए दैत अछि। वास्तव मे ई संसार छोड़ एतेक बड़ अछि मुदा माताक स्नेह अमृत - तुल्य अछि माताक आशीर्वाद पाबि कए व्यक्ति धन्य - धन्य भऽ जाइत

प्र। प॰२॰ (संकलन) मैथिली (प्रतिष्ठा) द्वितीय-पत्र

5 भल भाव राम अवध सुचि करतौ,

Ans :- एहि संकलन मे मातृभूमि प्रेम के वर्णन मे कहल गेल अछि जे मनुष्यक अपन मातृभूमि सँ प्रेम नहि होमए ओ मनुष्य जीवित कदापि नहि कहल जा सकैत अछि। मातृभाषा, मातृभूमि प्रति मधुर छथि, मातृभूमि सन प्रेममय स्थान कोनो नहि मातृभाषा सन मधुर आ आनन्ददायक भाषा कोनो भाषा नहि होइछ।

जे मनुष्य माताक अनादर करैत छथि माताक महत्व के बिसैर जाइत छथि, ओ मनुष्यक श्रेणी मे नीचा भए रहि जाइत छथि। पुत्र कुपुत्र होयत अछि, मुदा माता कहियो कुमाता नहि भए सकैत अछि। हमरे मातृभूमि अनेकानेक पुत्र-रत्न के उत्पन्न कयने छथि। राम आ कृष्ण सनि योद्धा रचना कए किशोरावस्थाक बालक पुराण, व्यास, वाल्मीकि, अयाचि अनेक शंकराचार्य, महात्मा ... अनेकानेक सन्तान एहन मातृभूमिक संतान छलाह। आइयो माता हिनका पर गर्व करैत छथि।
मातृभाषाक ऋण हम कहियो उऋण नहि भए सकैत छी।

21.5.20 (संकलन) मैथिली (प्रतिक्षा) द्वितीय-पत्र

Q जब जब राम अवध सुधि करही;

Ans- एहि संकलन मे मातृभूमिक प्रेम के बार्द मे कहल गेल अछि, जे मनुष्यक अपन मातृभूमि सँ प्रेम नहि होयछ ओ मनुष्य जीवित कदापि नहि कहल जा सकैत अछि, मातृभाषा, मातृभूमिक मधुलिक, मातृभूमि सनि प्रेममय स्थल कोनो नहि मातृभाषा सनि मीठ आ आनन्ददायक भाषा कोनो भाषा नहि होइछ।

जे मनुष्य माताक अनादर करैत छथि माताक महत्व के बिसैर जाइत छथि, ओ मनुष्यक श्रेणी सँ नीचा गेर खसि पड़ैत छथि। पुत्र कुपुत्र होयत अछि, मुदा माता कहियो कुमाता नहि भए सकैत अछि। हमर ई मातृभूमि अनेकानेक पुत्र-रत्न के उत्पन्न केने छथि, राम आ कृष्ण एहि धरती पर खेला कए किशोरावस्थाक चतुराम प्राप्त कएलाह। व्यास, वाल्मीकि, अगस्त्य, अत्रि, कपिल, जनक, शंकराचार्य, महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि अनेकानेक विद्वान मातृभूमिक संतान छलाह। भारत माता हिनका पर गर्व करैत छथि। मातृभाषाक ऋणसँ हम कहियो उऋण नहि भऽ सकैत छी।

विदेशो मे रहए वाला लोकनिक बहुतो
अपन मातृभूमि आ मातृभाषाकेँ
बिसरबाक नहि। हमरा सबकेँ मातृभूमि
सेवा मे अपन तन-मन-धन समर्पित
कए मानवीय गुणक विकसित करबाक
कृषि, वाणिज्य, दरिद्रताक अभावः
विद्याक प्रकाश हमरा जन-जन तक
फैलाबाक एकताक वृद्धि करब आध्यात्मिकता
कए आत्मिक प्रकाश फैलाक मातृभूमि
यथार्थ सेवा कए अपन मनुष्यताक
परिचय देबाक कृतार्थ करब थिक
ई मनुष्यक वास्तविक गुण थिक।
माखन लाल चतुर्वेदी एहि पंक्ति में
सारगर्भक देलन्हि —

मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ में देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक